राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – संभावनाएं और चुनौतियां

*डॉ. विनी शर्मा

शोध सारांशः–

भारत को जगतगुरु के रूप में संबोधित किया जाता रहा है। भारत के उच्च स्तरीय शैक्षिक स्थान में नालंदा. तक्षशिला इत्यादि के बल पर पूरे विश्व में भारत का सर्वोच्च स्थान रहा है। भारत देश के ही नहीं बल्कि विदेशों से भी विद्यार्थी यहां शिक्षा प्राप्त करने के लिए आया करते थे। देश का विकास, देश का निर्माण और देश का विनाश इन सभी के का केंद्र बिंदु शिक्षा स्थल ही होता है। विभिन्न सुझावों और विभिन्न शिक्षाविदों के अनुभव तथा के. कस्तूरीरंगन समिति की सिफारिश के आधार पर शिक्षा तक सबकी आसान पहुंच, समता, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही के आधारभूत स्तंभों पर निर्मित यह नवीन शिक्षा नीति सतत विकास के लिए एजेंडा 2030 रखा गया है और इसका उद्देश्य 21वीं शताब्दी की आवश्यकताओं के अनुकूल विद्यालय और विश्वविद्यालय की शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और वैश्विक महाशक्ति में बदलकर प्रत्येक छात्र में निहित अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना ही इस नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य है। इससे पूर्व 1968, 1986 और संशोधित शिक्षा नीति 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उपरांत यह नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाई गई है। वर्तमान भारत में इस नवीन शिक्षा नीति का विशिष्ट महत्व है। इस नवीन शिक्षा नीति से रचनात्मक और नवाचार को महत्व मिलेगा इस शोध पत्र में उच्च शिक्षा मंत्रालय के द्वारा जारी की गई शिक्षा नीति के बारे में बताने का एक प्रयास है। समय के साथ शिक्षा नीति में परिवर्तन आवश्यक होता है इसलिए देश की उन्नति और विकास सही तरीके से और तेजी से हो सके को, ध्यान में रखते हुए नवीन शिक्षा नीति को 34 वर्षों के बाद परिवर्तित किया गया है। इस नवीन शिक्षा नीति में मात्र पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं बल्कि उन्हें व्यावहारिक ज्ञान देकर उनकी मानसिक, बौद्धिक क्षमता को और ज्यादा योग्य बनाना है। शिक्षा किसी भी देश और समाज के विकास की महत्वपूर्ण इकाई होता है। शिक्षा के माध्यम से ही किसी भी देश का विकास तीव्र गति से हो सकता है। सामान्यतः समय के साथ प्रत्येक चीज में परिवर्तन होता है और उसके अनुसार शिक्षा में भी बदलाव किया जाता है क्योंकि जिस प्रकार पहले तकनीकी का विकास इतना नहीं हुआ था जितना वर्तमान समय में हम तकनीकी का विकास देख सकते हैं। इसलिए समय के साथ विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान और व्यवहारिक ज्ञान देना अति आवश्यक है जिससे वह अपने अच्छे भविष्य का निर्माण कर सके और देश का विकास कर सके। तेजी से बदलते सामाजिक आर्थिक वैश्विक परिवेश में यह शिक्षा नीति युवाओं को सक्षम बनाएगी औरभारतीय परंपराओं और मूल्यों को भी इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति काविजन रखा गया है। स्वामीविवेकानंद ने कहा था "जनता को शिक्षित बनाओ और उनके सर्वांगीण विकास करों..... तभी राष्ट्र का स्वरूप संभव है।"

शोध विधिः–

यह शोध लेख द्वितीय स्रोतों के माध्यम से लिखा गया है इसमें विभिन्न रिपोर्ट, समाचार पत्र, पुस्तकों और लिखो से, ई कंटेंट से तथ्यों का संकलन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

- नवीन शिक्षा नीति 2020 के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- नवीन शिक्षा नीति 2020 के लक्षण और सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त करना।
- नवीन शिक्षा नीति की संभावनाओं और नवाचारों को पहचाना।
- नवीन शिक्षा नीति की व्यवहारिकता में आने पर विभिन्न चुनौतियां को जानना।
- नवीन शिक्षा नीति की चुनौतियों के आने पर समाधान पहचाना।

कूट शब्दः– राष्ट्रीय शिक्षा नीति, अवधारणात्मक समझ, मानविकी, बहुअनुशासनात्मक, समग्रशिक्षा, सर्वांगीण विकास, भारतीय परंपराओं।

प्रस्तावनाः–

21वीं सदी को ज्ञान प्रधान सदी के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके अंतर्गत विज्ञान और तकनीकी विकास प्रमुख आधार है। किसी भी देश समाज और परिवार को समृद्ध और प्रतिस्पर्धी और विकसित बनाने की लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षा व्यक्ति के संपूर्ण विकास के लिए बहुत आवश्यक है इसलिए भारत में 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को शिक्षा का अधिकार दिया गया है। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 नई शिक्षा नीति समय की मांग और जरूरत के हिसाब से देश की शिक्षा व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने के लिए लाई गई है।[1](http://surl.li/ksvqy) वर्तमान समय में नवीन शिक्षा नीति ने शिक्षा के जगत के विभिन्न पहलुओं को परिवर्तित कर दिया है। यह एक ऐसी पहल है जिसमें प्राचीन बंदिशो को एक तरफ करके नए रूप से शिक्षा के प्रत्येक पहलू को नए रूप से रखने का कार्य किया गया है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में यह नया बदलाव एक नई पहल है डॉ. के. कस्तूरीरंजन की अध्यक्षता में नई शिक्षा नीति 2020 को निर्मित की गयी जिसकी घोषणा 29 जुलाई 2020 में की गई। नवीन शिक्षा नीति के व्यावहारिक धरातल पर आने पर शिक्षा जगत में नवीन चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। यह सर्वविदित है कि जिस देश में शिक्षा का स्तर मजबूत होता है वह देश तेजी से विकास की दिशा में आगे बढ़ता है। भारत देश में वर्ष1886 में शिक्षा नीति का निर्माण किया गया था और वर्ष 1992 में इसमें संशोधन किया गया। यह नीति दोषों से भरी हुई थी। इसके बाद भी इस पर ध्यान ना देना देश के विकास में बाधक बना हुआ था। नई शिक्षा नीति 2020 को आरंभ कर दिया गया जो की प्राचीन शिक्षा नीति से बेहतर और प्रभावी दिखाई देती है।

शिक्षा व्यवस्था में नवीन बदलाव[2]:–

- नवीन शिक्षा नीति के तहत सकल नामांकन अनुपात को वर्ष 2030 तक 100% लाने का निश्चितलक्ष्य रखना।
- नई शिक्षा नीति में पुरानी शिक्षा नीति की कमियों को हटाकर नवीन पाठ्यक्रम को संकलित करना और इसमें इस बात का ध्यान रखना की पाठ्यक्रम सरल सहज और विद्यार्थी की समझ में हो।
- शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जिसमें विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो इस नीति के तहत पाठ्यक्रम को छात्रों के लिए रुचिपूर्ण बनाना और तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिकता पर बल देना।

शिक्षा नीति का 5+3+3+4 पैटर्न[3](http://surl.li/kswem):–

- नई शिक्षा नीति के अनुसार अब 5+3+3+4 वाला पैटर्न फॉलो किया जाना।
- पहला– फाउंडेशन स्टेजः 5 वर्ष, प्रीप्राइमरी (3 वर्ष) + कक्षा 1 और 2, 6 से 8 वर्ष तक
- दूसरा–प्रिपेरटरी स्टेजः 3 वर्ष, कक्षा 3 से लेकर कक्षा 5 तक, 8 से 11 वर्ष
- तीसरा–मिडिलस्टेजः 3 वर्ष, कक्षा 6 से लेकर कक्षा 8 तक, 11 से 14 वर्ष
- चौथा–सेकेंडरी स्टेजः 4 वर्ष, कक्षा 9 से लेकर 12 कक्षा तक, 14 से 18 वर्ष
- अब से शिक्षा में रटने की बजाय अवधारणात्मक समझ पर जोर देना।
- ज्ञान वृद्धि के अलावा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी समृद्ध बनाने का प्रयास करना।
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास (स्वास्थ्यऔर कौशल) पर ध्यान केंद्रित करना।
- विद्यार्थियों के स्वास्थ्य कार्ड भी बनाए जाएंगे। नियमित रूप से छात्रों की स्वास्थ्य जांच की व्यवस्था की जाएगी।
- नई शिक्षा नीति को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए केंद्र और राज्य सरकार द्वारा जीडीपी का 6% हिस्सा व्यय किया जाएगा।
- नवीन शिक्षा नीति के माध्यम से अब विद्यार्थी अपना विषय चुनने के लिए स्वतंत्र होंगे।
- विद्यार्थी पहले की भांति आर्ट्स, साइंस, कॉमर्स में से किसी एक को चुने के अधिकारी नहीं बल्कि वह चाहे तो तीनों स्ट्रीम में से कोई सा भी विषय चुन सकते हैं।

नवीन शिक्षा नीति की संभावनाएं[4](http://surl.li/kswum) :–

1. प्रत्येक छात्र की अद्वितीय क्षमताओं को पहचाना और उसे बढ़ावा देना। इस शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में प्रत्येक छात्र के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों के साथ–साथ अभिभावकों को जागरूक करके हासिल किया जाना शामिल है।
2. ग्रेड 3 तक सभी छात्रों द्वारा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करना सर्वोच्च प्राथमिकता है।
3. सीखने की प्रक्रिया में लचीलेपन को शामिल किया गया ताकि शिक्षार्थियों के पास अपने सीखने के मार्ग और कार्यक्रमों को चुनने की क्षमता हो और इस तरह वह अपनी प्रतिभा और रुचि के अनुसार जीवन में अपना मार्ग चुन सकें।
4. सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बीच हानिकारक पदानुक्रम को खत्म करने के लिए कला और विज्ञान के बीच पाठ्यक्रम और पाठयक्रम गतिविधियों के बीच व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं आदि के बीच कोई सख्त अलगाव नहीं है।

5. ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में बहु अनुशासनात्मक और समग्र शिक्षा पर बल देना।
6. परीक्षाओं के लिए रटने की बजाय वैचारिकता पर बल देना।
7. तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना।
8. नैतिकता और मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे सहानुभूति, दूसरों के प्रति सम्मान, स्वच्छता शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक स्वभाव, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलवाद, समानता और न्याय पर बल देना।
9. शिक्षक और सीखने में बहु भाषावाद और भाषा की शक्ति को बढ़ावा देना
10. आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्यों को बढ़ावा देना जिससे जीवन कौशल में वृद्धिहो।
11. सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर देना न की परीक्षा को महत्व देना ताकि कोचिंग संस्कृति का विनाश हो सके।
12. शिक्षा को सरल एवं सुलभ बनाने के लिए तकनीक पर जोर देना।
13. विविधता और स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए शिक्षा देना।
14. सभी शैक्षणिक निर्णय में पूर्ण क्षमता और समावेशन को ध्यान में रखना।
15. विद्यालय से महाविद्यालय शिक्षा तक सभी स्तरों के पाठ्यक्रमों में तालमेल एवं सामंजस्य रखना।
16. शिक्षकों एवं संकाय को सीखनेका केंद्र मानते हुए उनकी भर्ती आदि हेतु उन्नत सुविधाओं का विकास करना।
17. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट स्टार के शोध संस्थानों का विकास करना।
18. भारतीय परंपराओं एवं गौरव का विकास करना। देश की प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति ज्ञान एवं परंपराओं का समावेश करना।
19. शिक्षा को सार्वजनिक सेवा मानते हुए इसे प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना जाए। इस हेतु आवश्यक प्रयास करना।
20. मजबूत और जीवन शिक्षा प्रणाली हेतु शिक्षा में पर्याप्त निवेश को बढ़ावा देने के लिए निजी और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना।
21. भारतीय भाषा, कला और संस्कृति का प्रचार करने में प्राथमिकता देना।
22. भारतीय भाषाओं के शिक्षक और सीखने को हर स्तर पर विद्यालय और विश्वविद्यालय के साथ एकता पर जोर देना।
23. संस्कृत और संस्कृति को मजबूत प्रस्ताव के माध्यम से मुख्य धारा मेंलाया जाना। जिससे संस्कृत विश्वविद्यालय भी उच्च शिक्षा के बड़े बहुविषेक संस्थान बनने की ओर अग्रसर होंगे।

नई शिक्षा नीति में चुनौतियांः–

वर्तमान में भारत में नवीन शिक्षा प्रणाली की कुछ समस्याएं इस प्रकार हमारे समक्ष आई हैं[5] (https://rb.gy/fyyyc) :–

1. खंडित उच्च शैक्षिक अवस्था।
2. संज्ञानात्मक कौशल के विकास और सीखने की परिणामों पर बल देना।
3. विषयों का एक कठोर विभाजन, विद्यार्थियों को बहुत पहले ही विशेषज्ञ और अध्ययन के संकीर्ण क्षेत्र की ओर धकेल देना।
4. सीमित क्षेत्र विशेष रूप से सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में जहां कुछ ही ऐसे विश्वविद्यालय, महाविद्यालय हैं जो स्थानीय भाषा में अध्ययन कराते हैं।
5. सीमित शिक्षक और संस्थागत स्वायत्तता का अभाव।
6. अधिकांश विश्वविद्यालय, महाविद्यालय में शोध पर कम बल और अनुशासन में पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धी परीक्षा शोध निधियां की कमी।
7. उच्च शिक्षण संस्थानों में गवर्नेंस और नेतृत्व क्षमता का अभाव।
8. नवीन शिक्षा नीतिमें विदेशी विश्वविद्यालयों का मार्ग प्रशस्त किया गया है जिसके अंतर्गत विभिन्न शिक्षाविदों का मानना है कि विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश के कारण भारतीय शिक्षण व्यवस्था महंगी होने की संभावना बढ़ सकती है।[6](https://rb.gy/wjp01)
9. विदेशी विश्वविद्यालय के भारत में प्रवेश से निपुण शिक्षक भी इन विश्वविद्यालय में पलायन कर सकते हैं।
10. दक्षिण भारतीय राज्यों का यह आरोप है कि त्रिभाषा सूत्र से सरकार शिक्षा का संस्कृतिकरण करने का प्रयास कर रही है।
11. वर्तमान में प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में कुशल शिक्षकों का अभाव है ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत प्रारंभिक शिक्षा हेतु की गई व्यवस्था व्यावहारिक समस्याएं आ सकती हैं।
12. विपक्षी दलों का आरोप है कि भारतीय शिक्षा नीति की दशा व दिशा तय करने में संसद की प्रक्रिया का उल्लंघन किया गया है जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 संसद के द्वारा लागू की गई थी।

नवीन शिक्षा नीति के के अंतर्गत हमारे समक्ष नवीन चुनौतियां और समस्याएं आ रही है। वर्तमान में शैक्षिक जगत में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। नये बदलाव और नई सोच को व्यवहार में लागू करने में कुछ परेशानियों का सामना करना ही होता है। लेकिन इस नई सोच को लागू करने से हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार होगा। इसको ध्यान में रखते हुए कुछ प्रयास किए जाने आवश्यक है6ः–

1. ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करना जिसमें बहू विश्वविद्यालय और महाविद्यालय शामिल हो, जो प्रत्येक जिले राज्य में हो, जो विशेषतः स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान करते हो।
2. बहु मिश्रित स्नातक शिक्षा की ओर आगे बढ़ना।

3. संकाय और संस्थागत सहायता की ओर आगे बढ़ाना।
4. विद्यार्थियों की अनुभव में वृद्धि के लिए पाठ्यचर्या, शिक्षण शास्त्र, मूल्यांकन और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले सहयोग में बदलाव लाना।
5. शिक्षण अनुसंधान और सेवा के आधार पर योग्यता, नियुक्तियों और कैरियर की प्रगति के माध्यम से संकाय और संस्थागत नेतृत्व की स्थिति की अखंडता की पुष्टि करना।
6. उत्तम अनुसंधान और विश्वविद्यालय और कॉलेजो में सक्रिय रूप से अनुसंधान की नींव रखने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना करना, व्यावसायिक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा की सभी नियमों को लचीला बनाने का प्रयास करना।

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नई शिक्षा नीति विभिन्न चुनौतियां और समस्याओं के बावजूद भी विभिन्न नवीन संतोषजनक उम्मीद और संभावनाओं का रास्ता दिखा रही है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए हमारी जीडीपी का 6% योगदान करना भी इसमें एक प्रावधान के रूप में रखा गया है। यह नई शिक्षा नीति युवा पीढ़ी के उज्जवल भविष्य और शिक्षा प्रणाली में विभिन्न बदलावों को लेकर सामने आई है। अब यह शिक्षा नीति संपूर्ण राष्ट्र के प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए खड़ी है। जमीनी/प्राइमरी स्तर पर बस एक जुझारू प्रयास भर की देरी है।जिसमें विभिन्न सरकारी समितियों, राज्य सरकारों, नीति निर्माताओं, क्षेत्र शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रत्यक्ष रूप में आकर अपना बहुमूल्य योगदान देकर नवीन शिक्षा नीति की सफलता को प्राप्त करने के लिए एक जुझारू प्रयास करना होगा।साथ ही हमें नीति और उसके कार्यान्वन के बीच के बड़े गहरे अंतर को भी समाप्त करना होगा।इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गुणवत्ता मानकों दोनों को लागू करना अत्यधिक आवश्यक है। गुणवत्ता मानकों के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए प्राइमरी विद्यालय का वैधानिक विनिमय्यन और लाइसेंसिंग और अनिवार्य निरीक्षण प्रक्रियाएं भी आवश्यक है। बुनियादी ढांचे और शैक्षिक संस्थानों में सुधार के लिए सार्वजनिक वित्त पोषण में वृद्धि, प्रारंभिक बचपन कार्यबल के लिए व्यवसायिक विकास को प्राथमिकता देना भी आवश्यक है। जिससे हम नवीन शिक्षा नीति के सुनिश्चित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध हो।

***सहायक आचार्य**
राजनीति विज्ञान विभाग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर (राज.)

संदर्भः–

1. अर्चना, नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020,नई शिक्षा नीति, अगस्त 21, 2023, http://surl.li/ksvqy
2. उपरोक्त
7. नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020,नई शिक्षा नीति, अगस्त 6, 2023, http://surl.li/kswem

8. पंडितराव, मृदुल माधव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, उच्च शिक्षा संस्थान/विश्वविद्यालय के रूप में एक छात्र, एक अभिभावक ,एक शिक्षक या हमारे लिए इसमें क्या है?, दिसंबर, 19, 2020 http://surl.li/kswum
9. कश्यप, डॉ .पूजा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अवसर एवम् चुनौतियां उच्चशिक्षा के संदर्भ में, अंतरराष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका,वॉल्यूम 9,अक्टूबर–दिसंबर 2020, https://rb.gy/fyyyc
10. दृष्टि IAS, UPSC सिविल सेवा, राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः महत्व और चुनौतियां, https://rb.gy/wjp01
11. कश्यप, डॉ .पूजा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अवसर एवम् चुनौतियां उच्चशिक्षा के संदर्भ में, अंतरराष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, वॉल्यूम 9,अक्टूबर–दिसंबर 2020, https://rb.gy/fyyyc

सहायक संदर्भः–

- प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की मांग पूरी करेगी नई शिक्षा नीति,आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
- गंगवाल सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला, दैनिक नवज्योति
- दुर्गेशसिंह, क्रॉनिकल मासिक पत्रिका, मई 2020
- प्रोफेसर के.एल.शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर, अगस्त 2020